

DPN 6208

Title : चक्रसम्बर विशुद्धि CAKRA SAMBARA VISUDDHI

Run. No. 6899

Cat. No.

Micro. No.

Subject ॥ तन्त्रिकी

Tantric Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16 x 6.5

Folios 8

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

[illegible]

माहल्लि वृथा वृथा विष्णु नया कालनी किन नाहु रुवदनी नमा
मि मालमंदरी ३ नकोमा विवका वल्लुंगी सकि कसा मना
रुला किन ना वी वृथीय नमामि भयूलवाहीनि ४ नवेरु
वीमामवल्ह सां चका रुसमभा रुगी किन ना विष्णु वृथीय नमामि ग
रुका नी ॥ ५ ॥ वा बाहि यद्या न दिव धाल वृथां रुथं कली

नय वृथा ला रुयमका टक्षनि त समर्थि कल्ल वृथा ६ कया लोमि
लसिन म ७ ॥ ७ ॥ वा ववाधि मृन छदा चदा दे धा न छन म ८
सवेला कार्य कालि ला विष्णु वका दुमोलिन ॥ ९ ॥ मि
था दष्टि यका नार्थ विरु का सा यन नम १० वरु माल विना मर्थ रि
व रक्षा ला ट दंष्ट्रिन ॥ ११ ॥ ध्यान य रु विष्णु वही वद द या

चक्रयमि ॥ सनादिनमाकां क. मुरुयनागछुदिक ॥ १५ ॥
याद्यदिनाययं या हक वरुनां च विछुदिक ॥ मछुछु यात्रिलसवे ह
जीवं या कयनमथा ॥ १६ ॥ ॥ छुछु सवेसनी यय. रुसाधुसनी सनमः
॥ छुछु सफ छु वरुदिक. नय समरुल रुके ॥ १७ ॥ ॥ छीछासा
मजनमा न विछुदिक नू वा सरुं ॥ वा वरुन य छु रुम छुं ॥ कनला

का रमुदुनू कां ॥ १८ ॥ ॥ छुछु छीछायका सचलसा विछुदिक
कं कां सभाक ॥ १९ ॥
॥ छुछु गालनमा मुशं. खमायल करि कया नधु. सवे विआयदा
कं च. छुछु मेका जानमा मुशं ॥ २० ॥ ॥ छुछु

ॐ का वायव्यमूका रुं सधूमिंदसमसिर्गं वृद्धीमू द जायकं नमावेन
चतुर्दिगं ॥ १ ॥ ॐ का वायव्यनीयारुं युद्धगजासमसिर्गं रु
स्यसम दयायकं नमायू कायनधमनं ॥ २ ॥ ॐ का वायव्य
हमारुं दक्षिणसमसिर्गं वृद्धमू दायव्यं वृद्धं नमामि तलस
रुवं ॥ ३ ॥ ॐ का वायव्यमूका रुं यथीममयू रासमसिर्गं

ध्यानमू दायव्यं नाथं जूमिगारुं नमामिदं ॥ ४ ॥ ॐ का वा
यव्यमूका रुं दक्षिणमू दासमसिर्गं जूरुयमू दासमा दू कां जू
माद्यसिद्धि नमामिदं ॥ ५ ॥ ॐ सर्ववापिमला यमव्यं रुग्णाधि
यनजिनं त्रिभक्तुं सदा वा जं यथे वृद्धं नमास्तु ॥ ६ ॥
नित्रात्रं रुनिनाका ययरा रुजा निप्रयीनि येरा वृद्धसिर्गं वृद्धं

वदसत्वनमस्तु ॥ १ ॥ नमस्तु भक्तिसिद्धाय धर्मसुख
नरुन जगद्गुरु जगन्नाथं भक्तिसिद्धनमास्तु ॥ ८ ॥ जसा
धर्मसुखं कथितं लुकिता वामात्रादिनं कथं मयि यदया दूष
थ दूषाजि वादयं वृद्धास्वह वन जगन्नाथ विप्रसत्त कर्मधुं ॥ ९ ॥
जगन्माहं नु पुत्रावाहं नु परवान्मा
गन्तुं वेनं रवाय ॥ निरुद्धं सर्वकालि

15

10

5

0

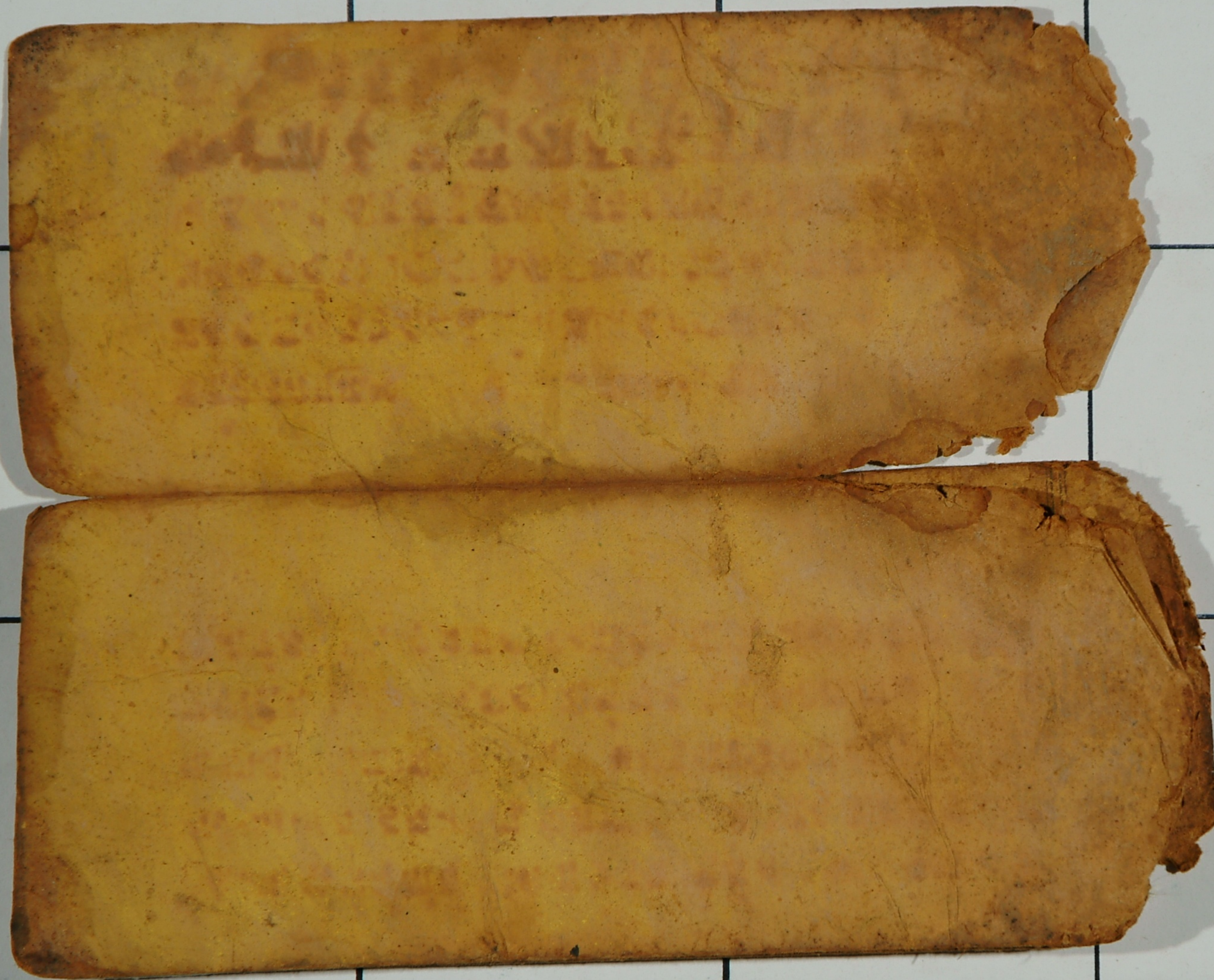
CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



五

कालमि कालानां दृष्टिं ह्युद्यानि चरुष ॥ द्विष्य ह्युद्यानि दानां ह्युद्या
 द्वा देवा रुष ॥ २ ॥ यथै ह्यनमयी वरु मा ला हिल सिद्धा जिल
 मयै रु गै ह्युद्या न्या कया लि ध्या यि य नम ॥ ३ ॥ मयै नि सि
 क नृप ला रुष का रु द ह्युदि क ॥ ली ध्या य य व ला य ह्य म हा रु न व
 य दि क ॥ ४ ॥ रु या ह्य नृ क या वै वा वा ना ध्या लि गि न नम

शयनं हनविष्णु दक्षी. वरुणसकामयालय ॥ ५ ॥ यक्षयाः
 जमिनाक्षुषा. वासवदां मन्त्रजि. (६) ॥ द. ग. मन्त्रा रुविनामार्थः ॥ ६ ॥
 लक्ष्म्याय नमः ॥ ६ ॥ यनादन. सर्ववृद्धयवाचनं ॥ ७ ॥ कुरु
 मन्त्राया. लो. दक्षनायकं नमः ॥ ८ ॥ कायवाचिकरु. दा
 याजि. रुद्रय. लक्ष्म्याय नमः ॥ ९ ॥ रावा. राववि. कल्याणां. शु. दार्थ. करुण